श्री जानकी-चालीसा
( श्री प्रेमनिधि प्रणीत )

निस्सीम करुणा पूर्णा
वात्सल्यैक महोदधिः ।
कान्ता श्रीराघवेन्द्रस्य
सर्वदा पातु जानकी ॥
नीलाम्भोजदलाभिराम नयनां
नीलाम्बरालंकृताम् ।
गौराङ्गी शरदिन्दु सुन्दरमुखीं
विस्मेर विम्बाधराम् ॥
कारुण्यामृत वर्षिणीं हरि हर
ब्रह्मादिभिर्वन्दिताम् ।
वन्दे भक्तजनेप्सितार्थ फलदां
रामप्रियां जानकीम् ॥

श्रीजानकीवल्लभ दुलहाभगवान् की जय।

श्रीमते रामानन्दाचार्याय नमः

❀ श्रीप्रेमनिधि--प्रणीत ❀

# श्री जानकी-चालीसा

दोहा--जय मिथिला अवधेश्वरि--
जय जय जनक किशोरि।
चरण कमल वन्दन करत,
'प्रेमनिधी' कर-जोरि॥

## ❁ चौपाई ❁

जय जय श्री मिथिलेश किशोरी।
जय रघुवर मुख-चन्द्र चकोरी॥
जय कञ्चनवन विहरण शीला।
जय प्रमोदवन सुन्दर लीला॥
उमा—रमा—ब्रह्माणि वन्दिता।
जय अयोनिजा जय अनिन्दिता॥
आद्यशक्ति साकेत-विलासिनि।
जय अनन्त अनुपम अविनाशिनि॥
दुख मोचनि सुख सम्पति दायिनि।
जय आह्लादिनि जय अनपायिनि॥

जय सर्वेश्वरि जनक दुलारी।
मातु सुनयना प्राण---पियारी ॥
जय करुणानिधि पङ्कज लोचनि।
रूपराशि रति गर्व विमोचनि ॥
अष्ट--सिद्धि नव--निधि, वशाकरणी।
भक्ति शक्ति दायिनि भव तरणी ॥
धनुष टारि प्रभुता प्रगटाई।
प्रणमिस करि प्रभु छवि दरसाई ॥
मिथिला धरणी तिलक बनाई।
युगल रूप माधुरि बरसाई ॥
सोहत राम सिया की जोरी।
लखि लाजत रति मदन करोरी ॥

सुर, नर, असुर, गर्व हरि लीन्हों ।
जनक जाति पुर पावन कीन्हों ॥
जो तव कृपा कोर कण पावै ।
पामर जन ब्रह्माण्ड बनावै ॥
रामवल्लभा अग जग कारिणि ।
मिथिला, कामद अवध विहारिणि ॥
चन्द्रकला तव आज्ञा पाई ।
लाई विपिन सहित रघुराई ॥
गौतम, शतानन्द, सुख पाये ।
नारद वचन सत्य मन भाये ॥
लक्ष्मीनिधि है तेरो भैया ।
जिनको गावत सुयश रमैया ॥

चन्द्रकलादिक सखी सलोनी ।
जिन सम जग कोउ है नहिं होनी ॥
तव लीला सुख निरखि सनेहा ।
योग रोग सम तज्यो विदेहा ॥
शबरी, गीध, कपीश निवाजे ।
लङ्क विभीषण अचल विराजे ॥
खर-दूषण--रावण गति पाई ।
तारे अमित लोक दुखदाई ॥
शिव शत-वर्ष दिव्य तप कीन्हो ।
तुमहिं छाँड़ि प्रभु वर नहीं दीन्हों ॥
युगल रूप आराधन लागे ।
तब शिव परम प्रेम--रस पागे ॥

सीता सहित नाम जप कीन्हे ।
द्रवत राम सिय परिकर चीन्हे ॥
दश अपराध न कबहूँ लागे ।
युगल नाम सुमिरत अनुरागे ॥
घोर ब्रह्म हत्या शिव लागी ।
मिथिला रज परसत सो भागी ॥
जय साकेत अधीश्वरि सीते ।
राम प्रिया जगदम्ब पुनीते ॥
अद्भुत चरित किये जगमाहीं ।
कोविद कवि कहि सकत सो नाहीं ॥
सहस बदन रावण तुम मारयो ।
राम सुयश त्रिभुवन विस्तारयो ॥

भरत शत्रुहन लक्ष्मण हारे ।
हनुमन्तही विकल करि डारे ॥
यह प्रताप तव तनय दिखायो ।
लव-कुश वेद विदित यश गायो ॥
दुष्ट निशाचरि अति दुख दीन्हे ।
सो मन महँ किञ्चित् नहिं लीन्हे ॥
दण्ड देत हनुमन्त बुझाई ।
रक्षा कीन्हि परम करुणाई ॥
लघु लज्जित प्रभु सभा बिचारी ।
क्षमा शील जय अवनि कुमारी ॥
चरण--शरण आयो जन तेरी ।
कृपा करहु कीजे जनि देरी ॥

शीत विवश सी सी-सिसकार्यो ।
करुणामयि निज नाम विचार्यो ॥
कीन्हो तेहि साकेत--निवासी ।
धन्य--धन्य जय करुणा राशी ॥
विविध रूप धरि सुर--सुर--नारी ।
परिचर्या नित करत सुखारी ॥

तव गुण गावत श्री रघुराई ।
मुद-मंगल--शुभ देत अघाई ॥
करि करुणा निज दरशन दीजै ।
चरण शरण सियजू रखि लीजै ॥

❀ दोहा ❀

करुणामृत बरसत रहै,
हृदय भरे अनुराग।
'प्रेमनिधी' लहरत रहै,
बाढ़ै सरस सुभाग॥
चालीसा यह नित्य जो,
पढ़ै सुने अरु गाय।
रिधि सिधि सुख सम्पति सकल,
प्रेम भक्ति सरसाय॥

❀ सियावर रामचन्द्रजू की जय ❀

इति श्री "प्रेमनिधि" प्रणीत।
श्री जानकी चालीसा
॥ सम्पूर्ण ॥

# श्री मिथिला-चालीसा

मिथिला महिमा अवधि है,
मिथिला मङ्गल रूप ।
एक बार मिथिला गये,
नर न पड़े भवकूप ॥

जय जय श्री मिथिला महारानी ।
जय जय प्रेम भगति रस दानी ॥
दिव्य विभूति परम सुख खानी ।
जय जय रसिक राज रजधानी ॥
चिदानन्द मयि परम प्रकाशी ।
जय मिथिले अगणित गुण राशी ॥

सीता पद रज अंकित धरणी।
महिमा अमित वेद बहु वरणी॥
भूमि तिलक गावत श्रुति सन्ता।
महिमा अमित अगाध अनन्ता॥
सप्तपुरी जे मुक्ति प्रदाता।
तिनकी प्राण रूप सुख दाता॥
गौतम---याज्ञवल्क्य ऋषि राजा।
नव योगेश्वर सन्त समाजा॥
परम हंस शुकदेव सुजाना।
पायो परम तत्त्व विज्ञाना॥
जय मिथिले सद्गुण गण आगरी।
कृपा दया वात्सल्य सागरी॥

परात्परा श्री शक्ति निकेता।
राजत रघुवर सीय समेता॥
आह्लादिनी सियकी आह्लादिनी।
प्रेम परा भक्ति आस्वादिनी॥
बार--बार तव चरण मनावौं।
युगल प्रेम रस सिंधु समावौं॥
कमला— विमला—विरजा धारा।
दूधमती अति पुण्य अगारा॥
पावन परम कुण्ड सर राजै।
गंगा सागर आदि विराजै॥
घर—घर मन्दिर ठाकुर वारी।
अर्चत पूजत शुचि नर--नारी॥

परम रम्य प्रभु को अति प्यारी।
सिय की जन्मभूमि सुखकारी॥
'सखि सीता कहु' चिड़िया बोले।
'सीता--सीता' वचन अमोले॥
सरस सुमन सुरभित अति शोभे।
पुष्प, वाटिका लखि मन लोभे॥
परम पूज्य पूजे सब देवा।
मन वाञ्छित पावैं करि सेवा॥
परिक्रमा जो करैं सनेमा।
उपजत प्रभु पद पंकज प्रेमा॥
जन्म महोत्सव जनक लली को।
राम विवाह करैं अति नीको॥

रसिक सन्त प्रभु रस बरसावैं ।
गारि गाय रघुबीर रिझावैं ॥
जो कोउ मिथिला नाम पुकारे ।
सो नर श्री बैकुण्ठ सिधारे ॥
स्वपनहुँ में जो मिथिला सुमिरै ॥
ताकर दोष दुरित सब जरै ॥
वाह्याभ्यन्तर रिपुगण नाशै ।
उरमें मिथिला तत्व प्रकाशै ॥
श्री सिय पिय से मिलन करावै ।
थिर पद पंकज प्रेम बढ़ावै ॥
लाभ परम नर तन को पावै ।
जो नर मिथिला के गुण गावै ॥

जग के सकल तीर्थ अति पावन।
श्री मिथिला--मणि मुकुट सुहावन॥
राम रूप मिथिला के वासी।
जनक लली के चरण उपासी॥
धिक् धिक् जो मिथिला नहिं देखी।
नर तन लाभ न लह्यो विशेखी॥
रसिक सन्त जन की अति प्यारी।
मिथिला प्रीति बढ़ावन हारी॥
देश विदेश कतहुँ कोउ रहै।
मिथिला--मिथिला--मिथिला कहै॥
प्रात काल उठिकै शिर नावै।
पाप ताप तेहि निकट न आवै॥

कृपा करिय मिथिलेश कुमारी ।
निरखौं मिथिला धाम सुखारी ॥
जय–जय श्री मिथिले जगदम्बे ।
जय--जय दीन हीन अवलम्बे ॥
जय श्री मिथिले जय अघहारी ।
शरणागत में मातु तुम्हारी ॥
प्रभु को प्रगट परम पद धामा ।
वेद विदित अति ललित ललामा ॥
दुलहा राम सिया दुलहिन की ।
जय रसिकन के जीवन धन की ॥
जयति जनकपुर जय हो तेरी ।
विनती प्रभु सुनिये अब मेरी ॥

रसिकन संग रस मोद चढ़ावौं ।
प्रेमनिधी जग महँ लहरावौं ॥
जो मिथिला चालीसा गावै ।
भक्ति शक्ति सुख सम्पति पावै ॥

॥ दोहा ॥

जय मिथिले जय जनकजे
जयति जनकपुर धाम ।
प्रेमनिधी पद कमल में
पुनि पुनि करत प्रणाम ॥

॥ जनकपुर जनकलली की जय ॥

—: श्री मिथिला-चालीसा सम्पूर्ण :—

प्राप्तिस्थान

**श्री गोपाल रस्तोगी**

**श्री गोपाल एण्ड सन (कपड़े वाले)**

७६०, टाउन हाल के सामने, चाँदनी चौक,

दिल्ली-११०००६